# औपनविशकि और आधुनकि वास्तुकला

## प्रलिम्सि के लयि:

इंडो-गॉथकि शैली, नव-रोमन शैली, इबेरयिन वास्तुकला, पुरानी संसद भवन, गेटवे ऑफ इंडयिा, लॉरी बेकर, चार्ल्स कोरयिा

## मेन्स के लयि:

भारतीय वास्तुकला पर पुर्तगाली प्रभाव, भारतीय वास्तुकला पर फ्राँसीसी प्रभाव, भारतीय वास्तुकला पर ब्रटिशि प्रभाव, स्वतंत्रता के बाद की वास्तुकला, इबेरयिन और गोथकि वास्तुकला के बीच अंतर

## औपनविशकि वास्तुकला:

मुगल साम्राज्य के कमज़ोर होने पर यूरोपीय उपनविशवादी भारत आए, जसिसे **पुर्तगाली, फ्राँसीसी, डच, डेनशि और ब्रटिशि** के बीच सत्ता के लयि संघर्ष शुरू हो गया। यह प्रतयिोगति‍ा वर्ष 1947 तक ब्रटिशि शासन के साथ समाप्त हो गई। अपने प्रभुत्व के साथ-साथ**यूरोपीय लोगों ने अपनी नर्मिति इमारतों में प्रतबिबिति होने वाली ववििध स्थापत्य** शैली प्रस्तुत की।

## भारतीय वास्तुकला पर पुर्तगाली प्रभाव क्या है?

- **पुर्तगाली अपने साथ वास्तुकला की 'आईबेरयिाई शैली'** साथ लाये। उन्होंने शुरुआत में व्यापारकि चौकयिाँ और गोदाम बनाए, बाद में उन्हें समुद्र तट के कनिारे कलिेबंद शहरों में बदल दयिा गया।
- उन्होंने चर्च की ताकत को व्यक्त करने के लयि यूरोप में **16वीं शताब्दी के अंत में वकिसति 'घरों के आँगन (Patio Houses)',** यह प्रायः नमि्नवर्गीय हदिुओं के घरों के आँगन में स्थति मट्टी की दीवार वाली फूस की झोपड़ी होती है, **और 'बरॉक शैली' की अवधारणा** भी प्रस्तुत की।
    - **नाटकीय प्रभाव उत्पन्न** करने के लयि इसमें व्यापक, वसि्तृत और नाटकीय डज़िाइन था। इसमें वपिरीत रंगों का उपयोग शामलि था।

| चर्च | स्थान | शैली | नर्िमाण वर्ष | उल्लेखनीय वशिषताएँ |
|---|---|---|---|---|
| **सेंट केथेड्रल** | गोवा | पुर्तगाली लेट-गॉथकि | 1619 ई. | इसमें एक बड़ी घंटी है जसि "गोल्डन बेल" कहा जाता है। |
| **बेसलिकिा ऑफ बॉम जीसस (पवति्र यीशु)** | गोवा | बरॉक | 1604 ई. | इसमें वशि्व धरोहर स्थल सेंट फ्राँससि जेवयिर का शव (Body) शामलि है। |
| **सेंट पॉल चर्च** | दीव | बरॉक | 1610 ई. | द्वीप पर सबसे बड़ा पुर्तगाली कैथोलकि चर्च। |
| **सेंट ऐनी का चर्च** | तलौलीम, गोवा | बरॉक | 1695 ई. | इसे भारतीय बारोक शैली की उत्कृष्ट कृतकि रूप में तैयार कयिा गया है। |

| कलि | स्थान | नर्िमाण वर्ष | उल्लेखनीय वशिषताएँ |
|---|---|---|---|
| **अगुआंडा कैसल (बांद्रा कलि)** | मुंबई | 1640 ई. | अरब सागर और माहमि द्वीप की ओर देखने वाला वॉचटावर। |
| **दीव कलि** | दीव द्वीप | 1535 ई. | लाइटहाउस, दीवारों पर तोपें और अंदर तीन चर्च (सेंट थॉमस चर्च, सेंट पॉल चर्च, चर्च ऑफ सेंट फ्राँससि ऑफ असीसी)। |

//

## भारतीय वास्तुकला पर फ्राँसीसी प्रभाव क्या है?

- फ्राँसीसी अपने साथ **शहरी नगर नियोजन की अवधारणा लेकर** आए। पुद्दुचेरी और चंद्रनगर (अब चंदननगर, पश्चिम बंगाल) के फ्राँसीसी शहर कार्टेशियन **ग्रिड योजनाओं और वैज्ञानिक वास्तुशिल्प डिज़ाइनों** का उपयोग करके बनाए गए थे।
- उन्होंने शक्ति प्रदर्शन के तौर पर भव्य इमारतें बनाईं। उन्होंने **गुमनाम वास्तुकला की अवधारणा भी पेश** की जिसमें आधुनिक इमारतों की तरह, बिना अधिक अलंकरण या डिज़ाइन के एक साधारण मुखौटा शामिल है।
- फ्राँसीसियों ने माहे (केरल), कराईकल (तमिलनाडु) और यानम (आंध्र प्रदेश) के **तटीय शहरों का भी विकास** किया।

## भारतीय वास्तुकला पर ब्रिटिश प्रभाव क्या है?

- **परिचय:**
    - अंग्रेज़ों ने वास्तुकला की गॉथिक शैली की शुरुआत की। इसका भारतीय वास्तुकला के साथ विलय हो गया और परिणामस्वरूप **वास्तुकला की इंडो-गॉथिक शैली** सामने आई।
        - वर्ष 1911 के बाद, वास्तुकला की एक नई शैली उभरी जिसे **नव-रोमन वास्तुकला** के नाम से जाना जाता है।
- **इंडो-गॉथिक शैली:**
    - इसे **विक्टोरियन शैली** के रूप में भी जाना जाता है, यह वास्तुकला की भारतीय, फारसी और गॉथिक शैलियों का एक अनूठा मिश्रण था। इंडो-गॉथिक शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

| **विशेषताएँ** | **विवरण** |
|---|---|
| **विशाल और विस्तृत** | निर्माण भव्य और जटिल रूप से विस्तृत थे। |
| **पतली दीवारें** | इंडो-इस्लामिक निर्माण की तुलना में दीवारें पतली हैं। |
| **नुकीले मेहराब** | मेहराबों के आकार नुकीले थे, जो इंडो-इस्लामिक घुमावदार मेहराबों से भिन्न थे। |
| **बड़ी खिड़कियाँ** | विक्टोरियन शैली में विशाल खिड़कियों का उपयोग शामिल था। |
| **क्रॉस पर आधारित ग्राउंड प्लान** | चर्च अक्सर क्रॉस-आकार (क्रूसिफॉर्म) ग्राउंड प्लान का पालन करते थे। |
| **उन्नत संरचनात्मक डिज़ाइन** | अक्सर ब्रिटेन से आए उन्नत इंजीनियरिंग मानकों का पालन किया जाता है। |
| **आधुनिक सामग्रियों का उपयोग** | निर्माण में सटील, लोहा और कंक्रीट का परिचय। |
| **उदाहरण** | कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल, मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया आदि। |

# इबेरियन और गॉथिक वास्तुकला के बीच अंतर:

| आधार | इबेरियन वास्तुकला | गोथिक वास्तुशिल्प |
|---|---|---|
| **उपयोग की गई सामग्री** | पुर्तगालियों द्वारा प्रयुक्त मुख्य आवश्यक सामग्री ईंट थी। छतों और सीढ़ियों के लिये लकड़ी का उपयोग किया जाता था। | मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर और मोटे चूना पत्थर का उपयोग किया जाता था। |
| **संरचनात्मक विविधिताएँ** | पुर्तगालियों ने अपनी पश्चिमी परंपराओं को जारी रखा और कोई संरचनात्मक बदलाव नहीं किया। | अंग्रेज़ों ने भारतीय रूपांकनों और शैलियों को अपनाया, जिससे वास्तुकला की इंडो-गॉथिक शैली को जन्म मिला। |

- **नव-रोमन शैली:**
  - वर्ष 1911 के बाद ब्रिटिश राज द्वारा किये गए निर्माण **नव-रोमन शैली** या नियोक्लासिकल शैली के अनुसार किये गए थे।
  - एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर द्वारा बनाई गई नई दिल्ली की वास्तुकला इस शैली का सबसे अच्छा उदाहरण थी।**इसे अक्सर "हिंदुस्तान के रोम" के रूप में वर्णित किया गया** है। इस चरण की विशेषताएँ हैं:
    - निर्माण गुमनाम थे और बिना किसी दिलचस्प विशेषता के थे।
    - यह **वास्तुकला की सभी शैलियों का संगम था जिसने इस शैली** को भीड़भाड़ वाला बना दिया और कलात्मक अभिव्यक्ति की जगह को सीमित कर दिया।
    - निर्माण की मिश्रित प्रकृति के कारण सादगी, आधुनिकता और उपयोगिता अत्यधिक प्रतिबद्ध थी।
    - **गोलाकार इमारतों पर ध्यान** था।
    - पश्चिमी वास्तुशिल्प डिज़ाइनों को साकार करने के लिये प्राच्य रूपांकनों का अत्यधिक उपयोग किया गया।
    - **उलटे गुंबद की अवधारणा,** जैसा कि **सर्वोच्च न्यायालय और राष्ट्रपति भवन** (पुरानी संसद भवन) के शीर्ष पर देखा जा सकता है, इस चरण के दौरान प्रस्तुत की गई थी।

# ??????/?????????? ?? ??? ?? ?????????:

- **परिचय:**
  - वर्ष 1947 के बाद वास्तुकला के दो स्कूल उभरे - **रिवाइवलिस्ट और मॉडर्निस्ट।** हालाँकि दोनों स्कूल औपनिवेशिक प्रभाव से अलग नहीं हो सके। इससे **भारत की स्थापत्य परंपराओं के स्तर में गिरावट आई** है।
    - उदाहरण के लिये पंजाब सरकार ने **चंडीगढ़ शहर को डिज़ाइन करने** हेतु एक फ्राँसीसी वास्तुकार ले कोर्बुसीयर को नियुक्त किया।

**स्वतंत्रता के बाद की वास्तुकला की कुछ उल्लेखनीय हस्तियाँ:**

- **लॉरी बेकर:**
  - **"गरीबों के वास्तुकार (Architect of the Poor)"** के रूप में जाने जाने वाले **लॉरी बेकर (Laurie Baker)** केरल में क्रांतिकारी सामूहिक आवास अवधारणा के लिये ज़िम्मेदार थे।
  - वर्ष 2006 में, उन्हें वास्तुकला के [नोबेल पुरस्कार] कहे जाने वाले **प्रित्ज़कर पुरस्कार (Pritzker Prize)** के लिये नामित किया गया था। इसकी स्थापत्य शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:
    - स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके पर्यावरण-अनुकूल भवनों का निर्माण।
    - स्टील और **सीमेंट की खपत को कम करने के लिये फिलर स्लैब निर्माण** की अवधारणा प्रस्तुत की गई।
    - उन्होंने **वेंटिलेशन और तापीय आराम व्यवस्था (Thermal Comfort Arrangements)** पर भी बल दिया।

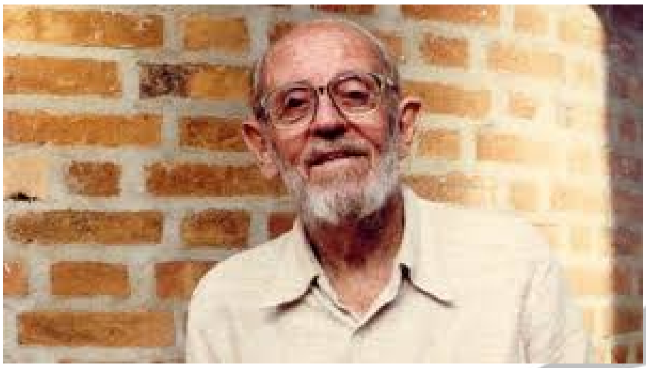

- **चार्ल्स कोरिया:**
  - उन्हें शहरी वास्तुकला और स्थानिक योजना में उनके काम के लिये जाना जाता है।
  - मैंने स्थानीय संवेदनाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप **आधुनिक वास्तुशिल्प सिद्धांतों को अपनाया** है।
  - उन्होंने मध्य प्रदेश विधानसभा भवन, अहमदाबाद में महात्मा गांधी मेमोरियल संग्रहालय, LIC भवन, दिल्ली में कनॉट प्लेस आदि जैसी **इमारतों को डिज़ाइन** किया है।
  - उन्हें वर्ष 2006 में [पद्म विभूषण] से सम्मानित किया गया।

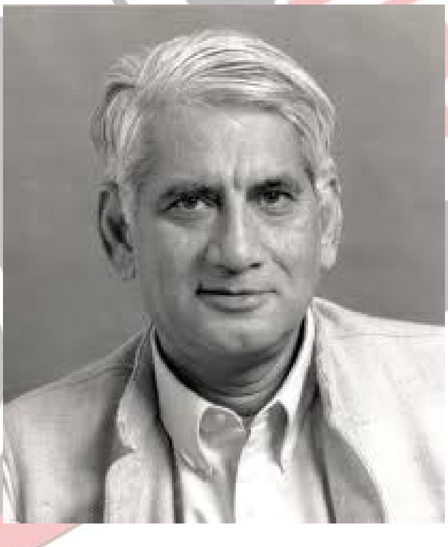

# निष्कर्ष:

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रागैतिहासिक काल से, कला एवं वास्तुकला ने भारत के लोगों के जीवन और अवकाश के समय को बेहतर बनाने में एक अनूठी अभिव्यक्ति पाई है। यूनानी, अरब, फारसी व यूरोपीय सभी ने इन परंपराओं पर अपनी छाप छोड़ी है, जो आज भारतीय कला और वास्तुकला की समृद्ध टेपेस्ट्री में योगदान दे रहे हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/colonial-and-modern-architecture